मधुमक्खी के व्यवहार को जानकर ही कर सकते हैं उसका पालन

भरतपुर. सरसों अनुसंधान निदेशालय में हुए कार्यक्रम में प्रमाण पत्र देते हुए।

मधुमक्खी-पालन एवं सरसों कृषि प्रबंधन दिया प्रशिक्षण

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भरतपुर. सरसों उत्पादक किसानों के लिए मधुमक्खीपालन करना एक वरदान हैं। सरसों की फसल में अधिक समय तक फूल बने रहते हैं इसलिए मधुमक्खीपालन इस फसल के साथ करने से शहद का अधिक उत्पादन होगा और लाभ भी अधिक मिलेगा। साथ ही मधुमक्खियों की ओर से परागण से सरसों उत्पादन में भी बढोतरी होगी। इससे किसान अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकते है। यह बात सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने मधुमक्खी-पालन एवं सरसों कृषि प्रबंधन पर आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि मधुमक्खीपालन की शुरुआत करने से पहले इसके बारे में पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए।

मधुमक्खियों का जीवन चक्र, व्यवहार, खान-पान इत्यादि का गहराई से अध्ययन करके ही मधुमक्खीपालन को लाभदायक बनाया जा सकता है। उन्नत तकनीकों को खेतों में अपनाकर कृषि के उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। सरसों का उत्पादन बढ़ाने में उन्नत किस्मों के चयन के साथ-साथ समय पर सही शस्य क्रियाओं को करने का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अशोक शर्मा ने कहा कि वैज्ञानिक खेती की अनुशंसित तकनीकों को अच्छी तरह समझकर उनका उपयोग करना चाहिए। किसानों को सरसों की खेती वैज्ञानिक तरीके से करके अपना उत्पादन बढाना चाहिए। उन्होंने कहा कि शस्य फसलों के साथ-साथ बागवानी, उद्यानकी एवं पशुपालन को भी अपनाएं ताकि अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो।

मधुमक्खी पालन के प्रति आकर्षित हो रहे युवा

प्रशिक्षण में किसानों को मधुमक्खी पालन का इतिहास, विकास, प्रारम्भ एवं प्रबन्धन मधुमक्खी का सामाजिक जीवन चक्र, पहचान एवं जीवन इतिहास मधुमक्खी-पालन के लिए आवश्यक सामान मधुमक्खियों से परागीकरणः मकरंद एवं पराग-स्त्रोत मधुमक्खी के रोग एवं शत्रु कीट दैनिक जीवन में शहद की उपयोगिता एवं व्यावसायिक मधुमक्खी-पालन-रानी मक्खी का पालन-पोषण मधुमक्खी के मोम एवं विष की उपयोगिता एवं मधुमक्खियों पर कीटनाशी रसायनों का कुप्रभाव मधुमक्खी पालन रूची समूह का गठन, मधुमक्खी पालकों के लिए योजनाएं राई-सरसों उत्पादन बढाने की रणनीति राई-सरसों उत्पादन की उन्नत शस्य क्रियाएं आदि की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में राजस्थान के टोंक जिले के 30 किसानों ने भाग लिया।

'सरसों उत्पादन के साथ मधुमक्खी पालन करें'

भरतपुर (निस)। सरसों उत्पादक किसानों के लिए मधुमक्खीपालन करना एक वरदान है। सरसो की फसल में अधिक समय तक फूल बने रहते है इसलिए मधुमक्खीपालन इस फसल के साथ करने से शहद का अधिक उत्पादन होगा और लाभ भी अधिक मिलेगा। साथ ही मधुमक्खियों द्वारा परागण से सरसों उत्पादन में भी बढोत्तरी होगी।

इससे किसान अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकते है। यह बात सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी. के. राय ने "मधुमक्खी-पालन एवं सरसों कृषि प्रबंधन" पर 27-31 जनवरी तक आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुये कही। उन्होंने कहा कि मधुमक्खीपालन की शुरूआत करने से पहले इसके बारे में पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। मधुमक्खियों का जीवन चक्र, व्यवहार, खान-पान इत्यादि का गहराई से अध्ययन करके ही मधुमक्खीपालन को लाभदायक बनाया जा सकता है। उन्नत तकनीकों को खेतों में अपनाकर कृषि के उत्पादन को बढाया

■ 'सरसों की फसल में अधिक समय तक फूल बने रहने से मधुमक्खी पालन बेहतर रहता है'

जा सकता है। सरसों का उत्पादन बढाने में उन्नत किस्मों के चयन के साथ-साथ समय पर सही शस्य क्रियाओं को करने का महत्वपूर्ण योगदान रहता

वर्तमान में कृषि जोत एवं संसाधन लगातार घटते जा रहे है और किसानो के सामने आय के विकल्प सीमित हो रहे है। इसलिए किसानों को अपनी आमदनी बढाने के लिए कृषि आधारित वैकल्पिक व्यवसाय अपनाने होगें तभी खेती लाभदायक होगी।

प्रशिक्षण में किसानों को मधुमक्खी पालन का इतिहास, विकास, प्रारम्भ एवं प्रबन्धन मधुमक्खी का सामाजिक जीवन चक्र, पहचान एवं जीवन इतिहास मधुमक्खी-पालन हेतु आवश्यक सामान मधुमक्खियों द्वारा परागीकरण: मकरंद एवं पराग-स्त्रोत मधुमक्खी के रोग एवं शत्रु कीट दैनिक जीवन में शहद की उपयोगिता एवं व्यावसायिक मधुमक्खी-पालन-रानी मक्खी का पालन-पोषण मधुमक्खी के मोम एवं विष की उपयोगिता एवं मधुमक्खियों पर कीटनाशी रसायनों का कुप्रभाव मधुमक्खी पालन रूची समूह का गठन, मधुमक्खी पालको के लिए योजनाएं राई-सरसों उत्पादन बढाने की रणनीति राई-सरसो उत्पादन की उन्नत शस्य क्रियायें आदि विषयों पर विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षित किया गया। किसानो को प्रायोगिक जानकारी देने के लिए मधुमक्खीपालन इकाई का भी भ्रमण कराया गया ताकि प्रतिभागियों का आत्मविश्वास बढे। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम को सराहा और सीखे गये ज्ञान का अन्य किसानों में प्रसार का विश्वास दिलाया। डॉ अशोक कुमार शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का संपूर्ण संचालन किया।